

एस. एन. एस. आर.के.एस. कॉलेज, सहरसा
(सम्बद्ध बी.एन. मंडल यूनिवर्सिटी, मधेपुरा, बिहार)

ऑनलाइन शिक्षण

प्रस्तुति : डॉ रिपुंजय कुमार सिंह (हिंदी विभाग, एस.
एन. एस. आर.के.एस. कॉलेज, सहरसा)

अध्ययन व विश्लेषण शिक्षण

भाग-65

बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी, तृतीय वर्ष

षष्ठ पत्र

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

निबंध-'अशोक के फूल'

मगर उदास होना भी बेकार है। अशोक आज भी उसी मौज में है, जिसमें आज से दो हजार वर्ष पहले था। कहीं भी तो कुछ नहीं बिगड़ा है, कुछ भी तो नहीं बदला है। बदली है मनुष्य की मनोवृत्ति। यदि बदले बिना वह आगे बढ़ सकती तो शायद वह भी नहीं बदलती। और यदि वह न बदलती और व्यावसायिक संघर्ष आरंभ हो जाता - मशीन का रथ घर्घर चल पड़ता - विज्ञान का सवेग धावन चल निकलता, तो बड़ा बुरा होता। हम पिस जाते। अच्छा ही हुआ जो वह बदल गई। पूरी कहाँ बदली है? पर बदल तो रही है। अशोक का फूल तो उसी

मस्ती से हँस रहा है। पुराने चित्त से इसको देखनेवाला उदास होता है। वह अपने को पंडित समझता है। पंडिताई भी एक बोझ है - जितनी ही भारी होती है, उतनी ही तेजी से डुबाती है। जब वह जीवन का अंग बन जाती है, तो सहज हो जाती है। तब वह बोझ नहीं रहती। वह उस अवस्था में उदास में उदास भी नहीं करती। कहाँ। अशोक का कुछ भी तो नहीं बिगड़ा है। कितनी मस्ती में डूब रहा है। कालिदास इसका रस ले सके थे। अपने ढंग से। मैं भी ले सकता हूँ, अपने ढंग से। उदास होना बेकार है।

('अशोक के फूल' -का मूल पाठ यहीं समाप्त हुआ)